भा. कृ. अनु. प.- केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर
ICAR-central Institute for Cotton Research, Nagpur
An ISO 9001:2015 Certified Organisation

कपास की खेती के लिए १० सितम्बर से १६ सितम्बर २०२६ तक चौदहवी साप्ताहिक सलाह

- **मृदा स्वास्थ्य, पोषण, कीट और रोग प्रबंधन पर सामान्य सलाह**

कपास की अधिक पैदावार संतुलित मृदा पोषण, जल प्रबंधन और सक्रिय, निगरानी-आधारित कीट एवं रोग प्रबंधन पर निर्भर करती है। एक समग्र और एकीकृत फसल प्रबंधन योजना को लागू करने से उचित वृद्धि और मजबूती सुनिश्चित होती है, लागत कम होती है और फसल को विनाशकारी कीटों और रोगों से होने वाले नुकसान से बचाया जा सकता है।

मृदा स्वास्थ्य एवं पोषण प्रबंधन (आईएनएम)

- **सूक्ष्म पोषक तत्वों का अनुकूलन करें**: फसल चक्र, जैविक संशोधनों और आवरण फसलों को प्राथमिकता देकर और बुवाई से पहले मिट्टी परीक्षण के आधार पर तर्कसंगत रासायनिक उर्वरक का उपयोग करके मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार करें।
- **सूक्ष्म पोषक तत्वों का प्रयोग करें:** आवश्यकतानुसार लक्षित पर्ण स्प्रे के माध्यम से द्वितीयक और सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी (जैसे जस्ता, बोरॉन, मैंगनीज और मैग्नीशियम) को सक्रिय रूप से दूर करें।

रोग प्रबंधन (आईडीएम)

- **निवारक उपायों को अपनाएं:** मिट्टी जनित और पर्ण जनित दोनों प्रकार के रोगजनकों का प्रबंधन एकीकृत कृषि पद्धतियों के माध्यम से किया जाना चाहिए, जिसमें उचित खेत की स्वच्छता और पौधों के स्वास्थ्य को बढ़ाने और रोग की घटनाओं को कम करने के लिए बीज और मिट्टी के उपचार के रूप में जैव कीटनाशकों और जैव उर्वरकों का अनुप्रयोग शामिल है।
- **पत्तों पर होने वाले प्रकोपों को नियंत्रित करें:** उच्च आर्द्रता की अवधि के दौरान नियमित रूप से खेत की निगरानी की जानी चाहिए, और अनुशंसित फफूंदनाशकों का प्रयोग विवेकपूर्ण तरीके से केवल तभी किया जाना चाहिए जब प्रचलित पर्यावरणीय परिस्थितियां रोग के तेजी से विकास और प्रसार के लिए अनुकूल हों।

एकीकृत कीट प्रबंधन (आईपीएम)

- **क्षेत्र निरीक्षण करें**: थ्रिप्स, चेपा, तेला और स्पाइडर माइट्स जैसे चूसने वाले कीटों के साथ-साथ सुंडी की निगरानी के लिए साप्ताहिक क्षेत्र निरीक्षण करें।

- **जाल और जैव-कीटनाशकों का उपयोग करें:** वयस्क पतंगों की उड़ान पर नज़र रखने, अंडे देने के चक्रों का अनुमान लगाने और प्राथमिक प्रतिक्रिया के रूप में जैविक, प्राकृतिक या पौधों पर आधारित कीटनाशकों का प्रयोग करने के लिए मौसम की शुरुआत में ही फेरोमोन जाल लगाएं।

- **प्राकृतिक शत्रुओं का संरक्षण करें:** लेडी बीटल, लेसविंग्स और बिग-आइड बग जैसे लाभकारी कीटों की रक्षा के लिए व्यापक-स्पेक्ट्रम फ़ार्मुलों के बजाय अत्यधिक चयनात्मक कीटनाशकों का चयन करें।
- **रासायनिक हस्तक्षेपों को सीमित करें:** लेबल पर अनुशंसित रासायनिक कीटनाशकों का उपयोग सख्ती से अंतिम उपाय के रूप में करें, और उनका केवल तभीउपयोगकरें जब कीटों की संख्या निर्धारित आर्थिक दृष्टी से नुकसानदायक सीमा स्तर सीमा तक पहुंच जाए।

ब. स्थान-विशिष्ट सलाह

हरियाणा		पिछले सप्ताह में वास्तविक वर्षा (मिमी)							अगले सप्ताह अनुमानित वर्षा (मिमी)				
		सितम्बर							सितम्बर				
		01	02	03	04	05	06	07	09	10	11	12	13
	हिसार	0	0	0	0	0	0	0	0	0.2	0	0	0
	जींद								0	0.1	0	0	0
	सिरसा								0	0	0	0	0
	रोहतक	0.9	0	0	0	0	0	0	0	0.1	0	0	0
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 से 2.4 मिमी		2.5 से 15.5 मिमी		15.6 से 64.4 मिमी			64.5 से 115.5 मिमी			115.6 से 204.4 मिमी	
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा			भारी वर्षा			बहुत भारी वर्षा	

फसल की स्थिति:

हिसार में, फसल डोडे (गुलर) बनने से लेकर डोडे खुलने तक कि अवस्था 105 से 140 दिन कि हैं। रिपोर्टिंग अवधि के दौरान हाथ से निराई, कीटनाशक छिड़काव, पर्णीय छिड़काव और सिंचाई (जहां बारिश नहीं हुई) की गई। अधिकांश खेत खरपतवारों से प्रभावित हैं। 13:00:45 की दर से 2 किलो प्रति एकड़ की दर से पर्णीय छिड़काव करें। कई खेतों में सफेद मक्खी आर्थिक दृष्टी से नुकसानदायक सीमा स्तर को पार कर गई है, साथ ही शहद की ओस और कालिमा फफूंदी के लक्षण भी दिखाई दिए हैं, जहां समय पर नियंत्रण उपाय नहीं अपनाए गए थे। आर्थिक दृष्टी से नुकसानदायक सीमा स्तर के करीब कई खेतों में हरे डोडों में में गुलाबी सुंडी का प्रकोप देखा गया। कुछ खेतों में फली सड़न के साथ-साथ कपास पत्ती मरोड़ विषाणु रोग की गंभीरता कम पाई गई। कुछ खेतों के कुछ हिस्सों में जड़ सड़न और मुरझान भी देखी गई। किसानों ने तनाव के कारण खुल चुकी कपास की तुड़ाई शुरू कर दी है।

सिरसा में, फसल 114 से 134 दिन कि है और अब इसमें डोडे बनने और विकसित होने की अवस्था में है। सिंचाई के साथ-साथ नाइट्रोजनयुक्त उर्वरक की विभाजित खुराक दी गई और जहां फसल की ऊपरी परत उपयुक्त थी, वहां हाथ से निराई की गई। कीटों और रोगों के नियंत्रण के लिए कीटनाशक का छिड़काव किया गया और सूक्ष्म पोषक तत्वों का पर्णीय छिड़काव भी किया गया। कपास के खेत में कुछ स्थानों पर खरपतवारों का प्रकोप देखा गया, जिससे पौधों की संख्या कम हो गई। तेला की संख्या तीन पत्तियों पर 3-14 के बीच थी, सफेद मक्खी की संख्या सामान्य आयु सीमा (आर्थिक दृष्टी से हानिकारक स्तर) से ऊपर बढ़कर तीन पत्तियों पर 19-59 के बीच हो गई और थ्रिप्स की संख्या सामान्य आयु सीमा (आर्थिक दृष्टी से हानिकारक स्तर) से ऊपर तीन पत्तियों पर 1-15 निम्फ और वयस्क के बीच थी। गुलाबी सुंडी का प्रकोप भी सामान्य आयु सीमा (आर्थिक दृष्टी से हानिकारक स्तर) से ऊपर देखा गया, जिससे 5-15% हरे डोडों को नुकसान पहुंचा।

सलाह:

हिसार में किसानों को कपास की फसल में सिंचाई करने की सलाह दी जाती है। फल लगने की चरम अवस्था के दौरान 7 से 10 दिनों के अंतराल पर 13:00:45 का 2 कि.ग्रा. प्रति एकड़ की दर से पर्णीय छिड़काव करें। उचित वृद्धि के लिए आवश्यकतानुसार 2.0% यूरिया और 0.5% जिंक सल्फेट 21% का पर्णीय छिड़काव भी किया जा सकता है। उपयुक्त अवस्था में कसौले से हाथ से निराई करें। रस चूसने वाले कीटों की संख्या आर्थिक दृष्टी से नुकसानदायक स्तर किसीमा को पार कर रही है, इसलिए 20 पौधे प्रति एकड़ पर रस चूसने वाले कीटों (थ्रिप्स, सफेद मक्खी और तेला) की निगरानी करना आवश्यक है। तेला और सफेद मक्खी को नियंत्रित करने के लिए 80 ग्राम प्रति एकड़ फ्लोनिकैमिड 50 डब्ल्यूजी और 400 मिलीलीटर एफिडोपायरोपेन 50 जी/एल डीसी का छिड़काव करें। यदि सफेद मक्खी का प्रकोप मध्यम से अधिक हो और उसमें निम्फ की संख्या अधिक हो, तो पाइरिप्रॉक्सीफेन 10 ईसी @ 400 मिली या स्पाइरोमेसिफेन 240 एससी @ 240 मिली प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें। कीटनाशकों को टैंक में मिलाकर छिड़काव न करें। गुलाबी सुंडी का प्रकोप शुरू होने पर, प्रति एकड़ 2 फेरोमोन ट्रैप लगाएं। प्रति एकड़ कम से कम 100 फूलों या 20 हरे डोडों की जांच करके गुलाबी सुंडी के संक्रमण का पता लगाएं। फूल आने की शुरुआती अवस्था में ही संक्रमित और सुंडी प्रभावित फूलों को इकट्ठा करके नष्ट कर दें। यदि फूलों/डोडों में गुलाबी सुंडी का संक्रमण आर्थिक दृष्टी से नुकसानदायक सीमा स्तर (>5%) से अधिक हो जाए, तो इमेमेक्टिन बेंजोएट 5SG @100 ग्राम या प्रोफेनोफोस 50 EC @ 500 मिली/एकड़ या क्विनालफोस 20 AF @ 400 मिली/एकड़ का छिड़काव करें। पिछले छिड़काव के 10-12 दिन बाद किसी वैकल्पिक कीटनाशक का छिड़काव किया जा सकता है। जड़ सड़न और मुरझाने से प्रभावित क्षेत्रों में, प्रभावित जड़ों को कार्बेन्डाजिम 50 WP @ 1.2 ग्राम/लीटर पानी से अच्छी तरह भिगो दें। यदि पौधों में मुरझान के लक्षण दिखाई दें, तो लक्षण विकसित होने के तुरंत बाद एक सप्ताह के अंतराल पर कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50% WP @ 250 ग्राम या कार्बेन्डाजिम 50% WP @120 ग्राम और यूरिया 2 किलोग्राम प्रति 100 लीटर पानी के घोल से 2-3 बार सिंचाई करें। नमी पूरी तरह सूखने के बाद अच्छी तरह से खिले हुए डोडों से कपास कि तुड़ाई करे। डोडे सड़न के प्रबंधन के लिए, कार्बेन्डाजिम 12% + मैनकोजेब 63% डब्ल्यूपी @30 ग्राम का पर्णीय छिड़काव करें, इसके बाद प्रोपिनेब 70% डब्ल्यूपी @25-30 ग्राम या प्रोपिकोनाजोल 25% ईसी @10 मिलीलीटर या एजोक्सिस्ट्रोबिन 18.2% w/w + डिफिनोकोनाजोल 11.4% w/w एससी @ 10 मिलीलीटर या फ्लक्सैपायरोक्साड 167 ग्राम/लीटर + पाइराक्लोस्ट्रोबिन 333 ग्राम/लीटर एससी @ 6 मिलीलीटर को 10 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें, विशेष रूप से फूल आने के 60-120 दिनों के दौरान और मौसम की स्थिति के अनुसार। यदि कालिमायुक्त फफूंद विकसित हो जाए, तो 10-15 दिनों के अंतराल पर प्रोपिकोनाजोल 25%ईसी @ 10 मिली/10 लीटर (500 मिली/हेक्टेयर) या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड (सीओसी) 50%डब्लूपी @ 25 ग्राम/10 लीटर (1250 ग्राम/हेक्टेयर) के 1-2 निवारक/उपचारात्मक स्प्रे करें।

सिरसा में किसानों को सलाह दी जाती है कि वे आवश्यकतानुसार खेतों की सिंचाई करें और यदि नाइट्रोजनयुक्त उर्वरक की खुराक शेष हो तो उसे भी डाल दें। यदि अचानक पत्तियां मुरझाने लगें, पीली पड़ें या लाल होने लगें, तो हल्की सिंचाई करें और प्रति एकड़ 15-20 किलोग्राम यूरिया का छिड़काव करें। 200 लीटर पानी में 2 किलोग्राम एनपीके (13:00:45) और 1 किलोग्राम मैग्नीशियम सोडियम (MgSO4) मिलाकर प्रति एकड़ 2-3 बार पत्तियों पर छिड़काव करें और इसे सप्ताह में एक बार दोहराएं। पैराविल्ट के लक्षण दिखाई देने पर, लक्षणों के प्रकट होने के तुरंत बाद से एक सप्ताह के अंतराल पर 2-3 बार कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50% WP @ 250 ग्राम या कार्बेन्डाजिम 50% WP @ 120 ग्राम और यूरिया 2 किलोग्राम प्रति 100 लीटर पानी के घोल से सिंचाई करें, या लक्षणों के प्रकट होने के तुरंत बाद (24 घंटे के भीतर) केवल प्रभावित पौधों पर कोबाल्ट क्लोराइड @ 10 मिलीग्राम (1 ग्राम प्रति 100 लीटर पानी) या सोडियम बेंजोएट @ 50 मिलीग्राम प्रति लीटर (5 ग्राम प्रति 100 लीटर पानी) का छिड़काव करें। सफेद मक्खी की संख्या की निगरानी मैन्युअल रूप से और/या पीले चिपचिपे जालों का उपयोग करके 8-10 प्रति एकड़ की दर से करते रहें और खेत की मेड़ों और आसपास के क्षेत्रों को सफेद मक्खी के अन्य वैकल्पिक मेजबान पौधों से मुक्त रखें। तेला और थ्रिप्स जैसे अन्य रस चूसने वाले कीटों की निगरानी जारी रखें, इसके लिए प्रति एकड़ 20 पौधों का निरीक्षण करें और प्रत्येक पौधे की तीन पत्तियों के नीचे से भी निरीक्षण करें। सफेद मक्खी के वयस्कों को नियंत्रित करने के लिए, 200 लीटर पानी में डिनोटेफुरान 20 एसजी @ 60 ग्राम या फ्लोनिकैमिड 50 डब्ल्यूजी @ 80 ग्राम या एफिडोपायरोपेन 50जी/एल @ 400 मिलीलीटर या डायफेंथियूरॉन 50डब्लूपी (जहां सिंचाई या वर्षा के कारण पर्याप्त नमी मौजूद हो) @ 200 ग्राम या प्रोफेनोफोस 50 ईसी @ 500 मिलीलीटर प्रति एकड़ की दर से प्रयोग करें। यदि चिपचिपी, चमकदार और तैलीय पत्तियों पर सफेद मक्खी के निम्फों की संख्या अधिक दिखाई दे, तो वयस्क मक्खियों को नियंत्रित करने के लिए छिड़काव के 3-5 दिन बाद 200 लीटर पानी में 500 मिलीलीटर पाइरिप्रॉक्सीफेन 10 ईसी या 400 मिलीलीटर बुप्रोफेज़िन 25 एससी या 240 मिलीलीटर स्पाइरोमेसिफेन 22.9 एससी प्रति एकड़ का प्रयोग करें। कालिमा फफूंद की स्थिति में, प्रोपिकोनाज़ोल 25 ईसी @ 1 मिली/लीटर या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड (सीओसी) 50 डब्ल्यूपी @ 2.5 ग्राम/लीटर का छिड़काव

10-15 दिनों के अंतराल पर एक या दो बार करें। तेला की समस्या को नियंत्रित करने के लिए, जहां भी इनकी संख्या आर्थिक दृष्टी से नुकसानदायक सीमा स्तर (2 निम्फ/पत्ती) से अधिक हो, वहां 200 लीटर पानी में टोल्फेनपाइराड 15 ईसी @ 300-400 मिली या फेनपाइरोक्सिमेट 5 ईसी @ 300 मिली या डिनोटेफुरान 20 एसजी @ 60 ग्राम/एकड़ का प्रयोग करें। सफेद मक्खी की संख्या की निगरानी के लिए प्रति एकड़ 8-10 पीले चिपचिपे जाल लगाएं। थ्रिप्स और गुलाबी सुंडी की प्रारंभिक बढ़ती संख्या को नियंत्रित करने के लिए, 5% नीम के बीज के अर्क (एनएसकेई) या एज़ाडिराक्टिन 1500 पीपीएम (0.15% ईसी) का छिड़काव 5 मिली/लीटर पानी में करें। गुलाबी सुंडी की आबादी को नियंत्रित करने के लिए, इमेमेक्टिन बेंजोएट 5 एसजी @ 100 ग्राम या स्पिनेटोरम 11.7 एससी @ 170 मिलीलीटर या प्रोफेनोफोस 50 ईसी @ 500 मिलीलीटर प्रति एकड़ का छिड़काव करें और प्रति एकड़ 200 लीटर पानी का उपयोग करें। देसी (आर्बोरियम) कपास में 5% फलने वाले भाग को नुकसान (फैले हुए वर्गाकार या गिरे हुए फलने वाले भागों में) पहुंचाने वाले चित्तीदार सुंडी को 200 लीटर पानी में स्पिनोसाड @ 75 मिलीलीटर/एकड़ का छिड़काव करके नियंत्रित किया जा सकता है। भारी वर्षा और जलभराव की स्थिति में, फसलों को नुकसान से बचाने के लिए खेतों से अतिरिक्त पानी निकालने हेतु उचित जल निकासी व्यवस्था बनाए रखें। जड़ सड़न और मुरझान रोग की नियमित निगरानी करें। शुरुआती लक्षणों वाले पौधों और उनके आसपास के पौधों को ट्राइकोडर्मा एसपीपी. 1% डब्ल्यूपी @ 50 ग्राम या कार्बेन्डाजिम 50% डब्ल्यूपी @ 12 ग्राम/10 लीटर पानी से सींचें ताकि जड़ सड़न और मुरझान रोग को नियंत्रित किया जा सके।

राजस्थान		पिछले सप्ताह में वास्तविक वर्षा (मिमी)							अगले सप्ताह अनुमानित वर्षा (मिमी)				
		सितम्बर							सितम्बर				
		01	02	03	04	05	06	07	09	10	11	12	13
	अजमेर	0	0	0	0	24	9	0	0	0.1	0.2	0.2	0.1
	जोधपुर	0	0	0	0	0	0	0	0.1	0	0.1	0.2	0
	नागौर								0	0.1	0.2	0.1	0
	पाली	0	0	0	0	0	0	0	0	0.1	0.1	0.2	0.1
	श्रीगंगानगर	0	0	0	0	18.1	0	0	0.1	0	0	0	0
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 से 2.4 मिमी		2.5 से 15.5 मिमी		15.6 से 64.4 मिमी				64.5 से 115.5 मिमी		115.6 से 204.4 मिमी	
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा				भारी वर्षा		बहुत भारी वर्षा	

फसल की स्थिति:

श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ जिलों में, फसल डोडे (गुलर) बनने से लेकर डोडे फूटने (खुलने) तक 110 से 126 दिन कि है। हाथ से निराई-गुड़ाई और अंतर-फसल क्रियाएं की गईं। तेला की संख्या 0.0 से 5.00 प्रति तीन पत्तियां, सफेद मक्खी की संख्या 0.00 से 19.00 प्रति तीन पत्तियां और थ्रिप्स की संख्या 5.00 से 14.00 प्रति तीन पत्तियां पाई गई।

बांसवाड़ा में, फसल 64 से 70 दिन कि है और फूल-पाती आने, फूल औरडोडे (गुलर) बनने की अवस्था में है। खेत साफ-सुथरे हैं। रस चूसने वाले कीटों के लिए समय पर छिड़काव किया गया है। खरपतवारों का कोई प्रकोप नहीं है। रस चूसने वाले कीटों में, कपास के खेतों में सफेद मक्खी का प्रकोप दिखना शुरू हो गया है, लेकिन यह निर्धारित समय सीमा (आर्थिक दृष्टी से हानिकारक स्तर) से कम है। तेला का प्रकोप निर्धारित समय सीमा (आर्थिक दृष्टी से हानिकारक स्तर) से अधिक है। कोई रोग नहीं है।

सलाह:

श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ जिलों में किसानों को सलाह दी जाती है कि वे फसलों में कीटों और रोगों की नियमित निगरानी करें। पिछले वर्ष जिन स्थानों पर गुलाबी सुंडी का प्रकोप पाया गया था, उन स्थानों पर इस वर्ष भी इसके प्रकोप की गहन निगरानी आवश्यक है। गुलाबी सुंडी की गतिविधि पर नज़र रखने के लिए 5 फेरोमोन ट्रैप प्रति हेक्टेयर की दर से लगाएं। यदि प्रति 100 फूलों में से 5 से अधिक फूलों पर सुंडी प्रभावित फुल दिखाई दें या डोडों में 5% से अधिक कीटों का प्रकोप हो, तो प्रोफेनोफोस 50% ईसी का 2.5 मिली/लीटर की दर से, इमेमेक्टिन बेंजोएट 5 एसजी का 0.50 ग्राम/लीटर की दर से, या

इंडोक्साकार्ब 14.5 एससी का 1.0 मिली/लीटर की दर से पानी में मिलाकर छिड़काव करें। तेला और सफेद मक्खी को नियंत्रित करने के लिए फ्लोनिकैमिड 50 डब्ल्यूजी का 0.40 ग्राम/लीटर की दर से स्प्रे करें या एफिडोपायरोपेन 50 डीसी का 1.50 मिलीलीटर/लीटर पानी में स्प्रे करें या थियामेथॉक्सम 24 डब्ल्यूजी का 0.5 ग्राम/लीटर पानी में स्प्रे करें, जबकि सफेद मक्खी के निम्फ के मामले में, पाइरिप्रॉक्सीफेन 10% ईसी का 2.5 मिलीलीटर/लीटर की दर से स्प्रे करें या स्पाइरोमेसिफेन 22.9 एससी का 1.25 मिलीलीटर/लीटर पानी में स्प्रे करें। यदि थ्रिप्स का प्रकोप आर्थिक दृष्टी से हानिकारक स्तर से अधिक हो, तो स्पिनेटोरम 11.7 SC का 0.84 मिली/लीटर या प्रोफेनोफोस 50EC का 2.5 मिली/लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। यदि कालिमायुक्त फफूंद लग जाए, तो प्रोपिकोनाजोल 25%EC का 10 मिली/10 लीटर (500 मिली/हेक्टेयर) या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड (COC) 50%WP का 25 ग्राम/10 लीटर पानी (1250 ग्राम/हेक्टेयर) में मिलाकर 10-15 दिनों के अंतराल पर 1-2 बार निवारक/उपचारात्मक छिड़काव करें। यदि अचानक मुरझाने, पत्तियों के पीले पड़ने या लाल होने की समस्या हो, तो हल्की सिंचाई करें और प्रति एकड़ 15-20 किलोग्राम यूरिया का छिड़काव करें। एनपीके (13:00:45) का 2 कि.ग्रा. और एमजीएसओ4 का 1 कि.ग्रा. प्रति एकड़ 200 लीटर पानी में मिलाकर 2-3 बार पत्तियों पर छिड़काव करें और इसे 2-3 बार दोहराएं। यह प्रक्रिया साप्ताहिक अंतराल पर की जानी चाहिए। पैराविल्ट के लक्षण दिखाई देने पर, लक्षणों के प्रकट होने के तुरंत बाद से एक सप्ताह के अंतराल पर 2-3 बार कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50% WP @ 250 ग्राम या कार्बेन्डाजिम 50% WP @ 120 ग्राम और यूरिया 2 किलोग्राम प्रति 100 लीटर पानी के घोल से सिंचाई करें, या लक्षणों के प्रकट होने के तुरंत बाद (24 घंटे के भीतर) केवल प्रभावित पौधों पर कोबाल्ट क्लोराइड @ 10 मिलीग्राम (1 ग्राम प्रति 100 लीटर पानी) या सोडियम बेंजोएट @ 50 मिलीग्राम प्रति लीटर (5 ग्राम प्रति 100 लीटर पानी) का छिड़काव करें।

दक्षिण राजस्थान (बांसवाड़ा, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, राजसमंद, सलूंबर और उदयपुर) में, जहां नम मिट्टी की स्थिति में हाथ से निराई संभव नहीं है, किसानों को सलाह दी जाती है कि यदि खेत में घास वाली खरपतवारें फैली हों तो क्विज़ालोफ़ॉप एथिल 5% ईसी @ 2 मिली/लीटर पानी का प्रयोग करें, या चौड़ी पत्ती वाली खरपतवारों के लिए पाइरिथियोबैक सोडियम 10% ईसी @ 1.25 मिली/लीटर पानी का प्रयोग करें, या घास और चौड़ी पत्ती वाली दोनों प्रकार की खरपतवारों को नियंत्रित करने के लिए पाइरिथियोबैक सोडियम 6% ईसी + क्विज़ालोफ़ॉप एथिल 4% ईसी @ 2-2.5 मिली/लीटर पानी का प्रयोग करें। कपास के खेतों में रस चूसने वाले कीटों के संक्रमण के किसी भी लक्षण के लिए लगातार निगरानी करते रहें। यदि संक्रमण आर्थिक दृष्टी से हानिकारक स्तर से अधिक हो जाए तो रस चूसने वाले कीटों को नियंत्रित करने के लिए 5% नीम के बीज के अर्क (एनएसकेई) या एज़ाडिराक्टिन 1500 पीपीएम (0.15% ईसी) @ 5 मिली/लीटर पानी का छिड़काव करें। सफेद मक्खी और तेला कीटों को नियंत्रित करने के लिए 8-10 पीले चिपचिपे जाल प्रति एकड़ लगाएं। यदि चूसने वाले कीटों की संख्या आर्थिक दृष्टी से हानिकारक स्तर से अधिक हो जाए, तो इनमें से किसी एक कीटनाशक का छिड़काव करें: बुप्रोफेज़िन 25 EC @ 1.25 लीटर/हेक्टेयर या डायफेंथियूरॉन 50 WP @ 625 ग्राम/हेक्टेयर या फ्लोनिकैमिड 50 WG @ 200 ग्राम/हेक्टेयर। गुलाबी सुंडी की निगरानी के लिए फेरोमोन जाल (5 प्रति हेक्टेयर) लगाएं। गुलाबी सुंडी की उपस्थिति की नियमित रूप से निगरानी करें और सुंडी प्रभावित फूलों (रोसेट फूल) को इल्लियों सहित नष्ट कर दें।

मध्य प्रदेश		पिछले सप्ताह में वास्तविक वर्षा (मिमी)							अगले सप्ताह अनुमानित वर्षा (मिमी)				
		सितम्बर							सितम्बर				
		01	02	03	04	05	06	07	09	10	11	12	13
	खरगाँव	0	0	0	0	0	0	0	4.1	0.4	0.2	10.8	13.6
	धार	0	0	0	15.9	4	0.2	0.5	1.8	0.4	0.4	5.2	7.4
	खांडवा	0	0	0	0	0	0	0	2.6	3.9	4.2	10.9	10.5
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 से 2.4 मिमी		2.5 से 15.5 मिमी		15.6 से 64.4 मिमी				64.5 से 115.5 मिमी		115.6 से 204.4 मिमी	
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा				भारी वर्षा		बहुत भारी वर्षा	

फसल की स्थिति:
खंडवा में, बोई गई फसल, फूल आने की अवस्था में 56 से 104 दिन की है। आवश्यकतानुसार खरपतवार नियंत्रण, उर्वरक और ड्रिप सिंचाई की गई है। खेतों में मौसमी खरपतवार जैसे कि साइनोडोन डैक्टिलोन, साइपरस रोटंडस, आर्जेमोन मैक्सिकाना और फाइलेन्थस निरूरी फैले हुए हैं। कुछ खेतों में तेल, चेपा और सफेद मक्खियों का प्रकोप देखा गया है। अभी तक किसी भी प्रकार की बीमारी की सूचना नहीं मिली है।

सलाह:

खंडवा में किसानों को समय पर खरपतवार नियंत्रण करने की सलाह दी जाती है। यदि मिट्टी नम हो और हाथ से खरपतवार निकालना संभव न हो, तो घास वाली खरपतवारों के लिए क्विज़ालोफ़ॉप एथिल 5% ईसी @ 2 मिली/लीटर पानी की दर से या चौड़ी पत्ती वाली खरपतवारों के लिए पाइरिथियोबैक सोडियम 10% ईसी @ 1.5 मिली/लीटर पानी की दर से या घास और चौड़ी पत्ती वाली दोनों प्रकार की खरपतवारों को नियंत्रित करने के लिए पाइरिथियोबैक सोडियम 6% + क्विज़ालोफ़ॉप एथिल 4% एमईसी @ 2-2.5 मिली/लीटर पानी की दर से खरपतवारनाशक का प्रयोग करें। गुलाबी सुंडी की निगरानी के लिए प्रति एकड़ 2 फेरोमोन ट्रैप लगाएं। 25% नाइट्रोजन की विभाजित खुराक को कॉलम विधि द्वारा 10 से 15 सेमी की गहराई पर डालें। रस चूसने वाले कीटों को नियंत्रित करने के लिए NSKE 5%+ नीम का तेल 5 मिली/लीटर या नीम के तेल पर आधारित फॉर्मूलेशन (300 या 1500 पीपीएम) 5 मिली/लीटर + 1.0 ग्राम कपड़े धोने के डिटर्जेंट इमल्शन का प्रयोग करें। यदि पैराविल्ट रोग दिखाई दे, तो लक्षण विकसित होने के तुरंत बाद एक-एक सप्ताह के अंतराल पर कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50% WP @ 250 ग्राम या कार्बेन्डाजिम 50% WP @ 100 ग्राम और यूरिया 2 किलोग्राम प्रति 100 लीटर पानी के घोल से 2-3 बार सिंचाई करें। लंबे समय तक सूखे की स्थिति में, डोडे (गुलर) लगने की चरम अवस्था के दौरान 7 से 10 दिनों के अंतराल पर 13:00:45 @ 2 किलोग्राम प्रति एकड़ 200 लीटर पानी में मिलाकर पर्णीय छिड़काव करें। यदि फुल –पाती गिरे हुए दिखाई दे, तो कपास के फुल-पाती और फूलों के प्राकृतिक रूप से झड़ने से बचने के लिए NAA @ 4 मिलीलीटर /10 लीटर पानी का पर्णीय छिड़काव करें।

कपास उत्पादन तकनीक, जैसे मिट्टी का चयन, किस्में, उर्वरकों का प्रयोग, बुवाई के तरीके, सिंचाई प्रणाली, खरपतवारों, कीटों और रोगों का प्रबंधन आदि की विस्तृत जानकारी आईसीएआर-सीआईसीआर, नागपुर द्वारा विकसित एंड्रॉइड आधारित सीआईसीआर कॉटन ऐप से प्राप्त की जा सकती है। इस ऐप को गूगल प्ले स्टोर से निःशुल्क डाउनलोड किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, फसल वृद्धि अवस्था विशिष्ट और मौसम आधारित साप्ताहिक सलाह आईसीएआर-सीआईसीआर की वेबसाइट)https://cicr.org.in/resource-weekly-advisory) पर भी अपलोड की जाती है ताकि किसानों के लाभ के लिए परामर्श किया जा सके।

Advisory issued by:
Dr. Vijay N. Waghmare
Director, ICAR-Central Institute for Cotton Research, Nagpur

Compilation by Dr. Isabella Agarwal

Editing Team:
Dr. G. T. Behere, Dr. A. S. Tayade, Dr. A. H. Prakash, Dr. S.K. Verma
Dr. S.K. Sain, Dr. Rishi Kumar, Dr. Babasaheb B. Fand, Dr. Ramkrushna GI
Dr. S.P Gawande, Dr. Shivaj Thube, Dr. R.R. Chapke

Regional language translation:
Hindi : Mr Ghanshyam Deogirikar & Mr Ashutosh Mishra
Punjabi : Dr Amarpreet Singh

Tamil	: Dr. A. Manikandan & Dr. M Saravanan
Telugu	: Dr L. Rajesh Chaudhary
Marathi	: Dr Vrushali Deshmukh & Mrs Pooja Ghonge
Gujrati	: Dr H R. Desai & Dr Vivek Shah
Oriya	: Dr B. S. Nayak
Kannada	: Dr Neelkanth Hiremani